जौनसार बावर पर आधारित पुस्तक "BEYOND POLYANDRY & Changing Profile of an Ethnic Himalayan Tribe" के विमोचन के अवसर पर माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन।

(दिनांकः 16 फरवरी, 2024)

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आज मैंने जौनसार बावर पर आधारित पुस्तक "BEYOND POLYANDRY & Changing Profile of an Ethnic Himalayan Tribe" का विमोचन किया है।

मुझे यह जानकर और भी खुशी हुई है कि जौनसार बावर की बदलती रुपरेखा को देश और दुनिया के सामने रखने के लिए इसी क्षेत्र में जन्में, एक पूर्व वर्दीधारी वरिष्ठ अफसर एडीशनल डायरेक्टर जनरल कृपाराम नौटियाल (सेवानिवृत) के द्वारा लिखी यह पुस्तक एक शोधपूर्ण कृति है।

मैं इस पुस्तक को डॉ. कृपाराम नौटियाल जी के द्वारा जौनसार बावर के लोगों के लिए उनके प्रेम का एक अनूठा उपहार मानता हूँ, क्योंकि यह पुस्तक उन्होंने 4 साल के गहन अध्ययन और उनके Doctoral शोध ग्रन्थ "Dynamics of Socio Cultural Changes Among Jaunsari Tribe" पर आधारित है।

दोस्त हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इसी प्रकार, एक किताब एक सबसे अच्छे दोस्त की तरह है जो हमें लगातार सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए प्रेरित करती है। किताबें हमारी असफलताओं पर काबू पाने के साथ–साथ हमारे दिमाग को आकार देने में भी मदद करती हैं।

किताबें आसपास की दुनिया को समझने, सही और गलत के बीच निर्णय लेने में हमारी मदद करती हैं। वे हमारे आदर्श, मार्गदर्शक या सर्वकालिक शिक्षक के रुप में भी हमारे जीवन में शामिल रहती हैं। सच में किताबों से गुजरना दुनिया के श्रेष्ठ अनुभवों से गुजरने जैसा है। ये न सिर्फ हमें जानकारियां देती है बल्कि हमारी कल्पना को रोशन करती हैं। किताबें आत्मविश्वास पैदा कर हमारी प्रतिभा को भी निखारती हैं।

हमारे राष्ट्र ने संस्कृति और परंपरा के संचित ज्ञानकोष से विश्व को अनेकों सांस्कृतिक, साहित्यिक और वैज्ञानिक रचनाएँ प्रदान की है। इन रचनाओं में आर्यभट्ट द्वारा शून्य का आविष्कार, चरक द्वारा आयुर्वेद की खोज, प्राचीनतम भाषा संस्कृत, योग, अध्यात्म आदि अनेकों सृजन है। भारतीय संस्कृति की इन रचनाओं ने विश्व में न सिर्फ अपनी अमिट छाप अंकित की है, बल्कि आज समस्त विश्व,

इन रचनाओं का पथ–प्रदर्शक स्वरुप अनुकरण कर इन्हें अपने जीवन में अपना भी रहा है।

यह हमारा गौरव है कि हम एक ऐसे देश के नागरिक हैं, जहाँ की संस्कृति एवं परंपरा इतनी प्राचीन और विकसित होने के साथ–साथ विभिन्नताओं से परिपूर्ण है। हमारी विविधताओं के कारण हम एक साथ विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं को अपने देश में ही देख सकते हैं।

इस पुस्तक के माध्यम से सभी पाठक जौनसार की संस्कृति, परंपराओं और गौरवशाली इतिहास से परिचित हो सकेंगे तथा इन्हें और जानने, समझने का प्रयास करेंगे। मैं आशा करता हूँ कि हम एक–दूसरे की परंपरा और संस्कृति को जानकर एवं समझकर एक–दूसरे का सम्मान करेंगे और इससे हमारे आपसी संबन्धों में प्रगाढ़ता के साथ ही एकजुटता को बढ़ावा मिलेगा।

संसार के अनेक देशों में जिन विशिष्ट प्राचीन संस्कृतियों का विकास हुआ, आज वे इतिहास की वस्तु बनकर रह गई हैं।

यूनान, मिस्र व रोम आदि देशों में जिन महान प्राचीन संस्कृतियों का विकास हुआ वे संस्कृतियां नष्ट हो गई, उनका अस्तित्व समाप्त हो गया। किन्तु भारत ही संसार

का एकमात्र ऐसा देश है जिसकी प्राचीन संस्कृति आज भी जीवंत बनी हुई है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण मानव जाति के सर्वांगीण विकास की विशेषता के कारण 'सोने की चिड़िया' कहलाया और इसी कारण इसे विश्व गुरु का पद प्राप्त हुआ। भारतीय संस्कृति से उत्सर्जित "वसुधैव कुटुंबकम" और "अतिथि देवो भव" की भावना को आत्मसात कर हमने सम्पूर्ण विश्व समाज को एक परिवार के रूप में देखा है। इसलिए हमारी संस्कृति विश्व में शांति स्थापित करने की क्षमता रखती है। अपने इन श्रेष्ठ मूल्यों के कारण ही हमारी सांस्कृतिक जीवनधारा अत्यंत प्राचीन काल से निरन्तर बहती चली आ रही है।

हमें अपने देश और प्रदेश की समृद्ध और विविध संस्कृति पर गर्व करना चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश की गौरवशाली विरासत को पुनर्जीवित करने और सम्मान देने के लिए कई प्रयास किए हैं। सरकार ने देश के तीर्थ स्थलों और आस्था स्थलों के कायाकल्प के लिए कई कदम उठाए हैं। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए सरकार ने भारत गौरव ट्रेनें शुरु कीं।

गुलामी के कालखंड में भारत को कमजोर करने की कोशिश करने वाले तानाशाहों ने सबसे पहले हमारे प्रतीकों को निशाना बनाया। आजादी के बाद इन सांस्कृतिक प्रतीकों का पुनर्निर्माण जरुरी था।

आज काशी में विश्वनाथ धाम की भव्यता भारत की अविनाशी महिमा की गाथा गा रही है, आज अयोध्यापुरी में दिव्य और भव्य श्री राम मंदिर हमारी अमरता का प्रमाण दे रहा है, श्री केदारनाथ धाम भी विकास की नई ऊँचाइयों को छू रहा है। अगर हम अपनी सांस्कृतिक पहचान का सम्मान करें तो देश के भीतर एकता और स्वाभिमान की भावना मजबूत होगी।

सांस्कृतिक पहचान किसी भी देश या क्षेत्र के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण आवश्यकता है। हमें अपनी पहचान जिंदा रखने के लिए अपनी जड़ों से जुड़ाव रखना चाहिए। आज हमें अपने रीति–रिवाज, परंपराएं संजोकर रखने की आवश्यकता है। जौनसार बावर की अपनी विशेष मान्यताओं और परंपराओं के कारण एक विशेष सांस्कृतिक पहचान है। प्राकृतिक संपदा एवं नैसर्गिक सौंदर्य से समृद्ध यह क्षेत्र सांस्कृतिक और आंतरिक सन्तुष्टता से परिपूर्ण है।

इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने जौनसार बावर की बहुत ही शोधमय तरीके से व्याख्या की है। मैं जब इस

पुस्तक को पढ़ रहा था तो मैंने यह महसूस किया कि जौनसार बावर में स्थित स्थान 'कालसी' का इतिहास के पन्नों में विशेष उल्लेख है। हमारी नई पार्लियामेंट बिल्डिंग जिसका की 28 मई, 2023 को उद्घाटन हुआ है, उसमें लगे अखण्ड भारत के नक्शे में पूरे हिमालयी क्षेत्र में सिर्फ 'कालसी' का नाम ही अंकित है जो कि इस स्थान के प्राचीन काल की सभ्यता से जुड़े होने को दर्शाता है। यहां पर अशोक स्तम्भ का होना मौर्यकाल साम्राज्य के अधिस्त होने के भी प्रमाण हैं। 'कालसी' कई सालों तक सिरमौर राज्य की भी राजधानी रही। यह सब यही दर्शाता है कि जौनसार बावर ऐतिहासिक दृष्टि से भी एक बहुत ही प्रमुख क्षेत्र रहा है।

मैं यह जानकर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ, कि जौनसार बावर का इतिहास वीरता के क्षेत्र में भी मिसाल कायम करता रहा है। यहां के वीर योद्धा नन्तराम के शौर्य से ही 1786 में मुगल आक्रमणकारी सेना को उल्टे पांव वापस लौटने में मजबूर कर दिया था और इसके लिए उन्होंने लड़ते–लड़ते अपना बलिदान दिया। यहीं के जन्में वीर केसरी चन्द जी अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में मात्र 24 साल की उम्र में जय हिन्द के नारे के साथ देश को आजाद करने के लिए ब्रितानी हुकूमत के सामने बिना झुके, भारत देश को आजाद करने के लिए फांसी पर चढ़कर अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। आज भी जौनसार

बावर के कई जांबाज फौज में रहकर देश सेवा कर रहे हैं जो कि एक गर्व की बात है।

भारत के नवगठित राज्य, उत्तराखंड को प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। हिमालय की बर्फीली चोटियाँ, असंख्य झीलें, हरी–भरी हरियाली क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को निहारती हैं। यहां के धार्मिक रीति–रिवाज और वन्यजीव विरासत की समृद्धता उत्तराखंड की भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का सही प्रतिनिधित्व करते हैं।

जौनसार बावर क्षेत्र प्राकृतिक सुन्दरता के साथ–साथ प्राकृतिक औषधियों का भी एक बहुत अच्छा स्रोत है जिसका इस शोध पुस्तक में बखूबी वर्णन है। वहां के रीति–रिवाज, त्यौहार और विवाह अपने आप में अनूठे हैं और बड़े धूमधाम से मनाये जाते हैं। यहां के ईष्ट देव महासू महाराज, जो कि एक न्याय के देवता माने जाते हैं, में लोगों की अटूट आस्था और विश्वास है।

मुझे इस बात की भी अत्यन्त खुशी है कि इस पुस्तक में जौनसार बावर के बदलते परिवेश के साथ–साथ लेखक ने इस क्षेत्र की उन्नति के लिए कुछ प्रमुख मुद्दों का व्याख्यान तथा उसका निवारण करने के भी सुझाव दिये हैं, जो कि भविष्य में जौनसार बावर की प्रगति के लिए मील का पत्थर साबित होंगे। इन मुद्दों पर गहन विचार करने की भी आवश्यकता है।

मैं अंत में ए.डी.जी. कृपाराम नौटियाल जी को बधाई देता हूँ और समस्त जौनसार बावर वासियों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

जय हिंद!